शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 जुलाई 2014

हिंदी व्यंग्य साहित्य में युगबोध

आरती (शोधार्थी)
दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

शोध संक्षेप

हिंदी व्यंग्य साहित्य हमारे युग की आवाज हैं। युगानुरूप रचा गया साहित्य शाश्वत महत्व का होता है क्योंकि उसमें तत्कालीन जीवन का स्पंदन होता है। कपोल कल्पना पर लिखा गया साहित्य क्षणिक आनंद तो प्रदान कर सकता है लेकिन जीवन की वास्तविकता का एहसास तो युगानुरूप रचा साहित्य ही करा सकता है। इसलिए इतने वर्षों बाद भी हरिशंकर परसाई , रवीन्द्रनाथ त्यागी, श्रीलाल शुक्ल ,शरद जोशी की लेखनी एक ताज़गी लिए हुए है। उनके बात कहने का ढंग हर वर्ग के पाठक को अपनी तरफ खींचता है। अपनी बात को सहज सामान्य रूप से हास्य-व्यंग्य के रूप में इस प्रकार कह जाना कि पाठक अपने आसपास के वातावरण में छायी विसंगति को जानने की कोशिश करता है।

भूमिका

व्यंग्यकारों का साहित्य समाज को एक नवीन दृष्टि से देखने का आग्रह करता है। घटना को उसके समूचे यथार्थ में देखकर उसकी वास्तविकता का दृश्य उपस्थित करता है जिन घटनाओं के प्रति समाज संवेदनशून्यता का परिचय देता है उन्हीं घटनाओं को साहित्यकार अपने लेखनी से कलात्मक रूप देकर नवीन अर्थछवियों को गढता नजर आता है।

जब न्याय के सारे रास्ते बंद हो जाते हैं, चीजे जहां होनी चाहिए वहां नहीं होती है, हर और विसंगितियों का साम्राज्य खडा हो जाता है, तब संवेदनशील लेखक की कलम उन्हें उकेरना प्रारम्भ करती है। वह उस सच को अपनी विशिष्ट अभिव्यक्ति शैली से सामने लाता है जो आमजन के सामने बिखरा हुआ होता है। लेखक विसंगीतियों के प्रति उत्तरदाई समुदाय की करतूतों को उघाड़ता चलता है। वह चाहता है कि जो बातें लोगों की नजरों से ओझल हैं या अपनी मजबूरियों के चलते वह उनकी उपेक्षा करता है, वे दो पल ठहर कर उस और निगाह करें क्योंकि उनसे उसका प्रतिदिन का सम्बन्ध है। यह अभिव्यक्ति सीधी न होते हुए व्यंजना लिए हुए होती है और वह कथन व्यंग्य की श्रेणी में पंहुच जाता है। हिंदी में अनेक व्यंग्यकारों ने अपनी समृद्ध वैचारिक अभिव्यक्ति से साहित्य जगत को वस्तुओं को देखने की नयी दृष्टि प्रदान की है।

हिंदी व्यंग्य साहित्य में युगबोध

प्रस्तुत पंक्तियों में व्यंग्यकार ने कितना गहरा व्यंग्य किया है। जिस न्याय व्यवस्था तंत्र का निर्माण आम जनता की सहायतार्थ ,सामाजिक व्यवस्था हेतु एवं विकास के लिए किया गया था स्वातंत्रयोत्तर भारतीय परिप्रेक्ष्य में आज वही अपनी गरिमा को विस्मृत कर बैठा है। घूस लेना जैसे सत्ता का शगल बन गया है। जिस पुलिस नामक संस्था का गठन समाज में व्यवस्था और न्याय के लिए किया गया था। आज वही संस्था समाज में अव्यवस्था और अन्याय की सबसे बडी पोषक बन गई है।

"पुलिस के सिपाहियों ने हड़ताल कर दी । कहने लगे , " आखिर हम भी आदमी है हमें पेट भरने तक का तो वेतन दो।"

पुलिस मंत्री ने सिर पीट लिया। अफसरों को बुलाकर डांटा -डपटा " कैसे नालायक लोगों को पुलिस में भर्ती कर लिया है । ये लोग पुलिस में होकर भी अपना पेट नहीं भर सकते। इतने अपराध होते हैं नगर में एक एक से दस पैसे भी लें तो लखपति हो जाए, और ये कहते हैं कि इनका पेट नहीं भरता।" 1 यहाँ पर कोहली ने पुलिस व्यवस्था में मिथक के माध्यम से आकस्मिक हड़तालों पुलिस वालों की भ्रष्ट आदत पर व्यंग्य कसा है। भारतवर्ष में कभी इस प्रकार के शासक हुआ करते थे जो अपने देश हित के लिए अपने प्राणों की बलि दे दिया करते थे । रघुकुल की परंपरा अपने प्राणों से ज्यादा अपने वचन निभाने की रही थी। यहाँ लेखक ने दो कालों के शासक और प्रजा के कार्य
व्यवहारों का मिथक के माध्यम से तुलना की है। चुनाव के वक्त वायदे तो बड़े-बड़े किए जाते हैं । सरकार चाहे कांग्रेस की बीजेपी की हो नुकसान जनता की ही होना है। कोरे भाषणों के जरिए भारतीय नेता अपनी सत्ता को आगे
बढा रहे हैं। 'अयोध्या के प्रतापी राजा दशरथ ने तो सिद्धांतों के हाथों पोल्ट्री फार्म ही नहीं ,अपना बाग- बगीचा ही उजाड़ डाला था -'रघुकुल रीति सदा चली आई। प्राण जाएँ पर वचन न जाइ। प्राण भला वचनों के सामने क्या हैं ? हमारे तो प्राण ही हमारे वचनों में बसते हैं। सारा देश बस वचनों ही वचनों पर चल रहा है। भाषणों की खेती होती है कारखानों में भाषण बनते हैं । सारा देश भाषण खाता भाषण पहनता -ओढ़ता है और भाषणों के मकान बनाकर रहता है लबाडियों का देश है । भाषणों ,वचनों , आश्वासनों से काम चल जाता है।" 2

जब रक्षक ही भक्षक बन जाए तो समाज किस दिशा में अग्रसर होगा। राजा दशरथ ने अपने प्राणों से प्रिय राम को कैकेयी को दिए गए अपने वचन की रक्षा हेतु वनवास दिया था और अपने परिवार को कुल और राजधर्म की मर्यादा हेतु बिखर जाने दिया । इसी प्रकार के राजा (नेता) तो आज भी हैं। सिर्फ फर्क इतना है कि वे अपने भाषणों से अपने परिवार को बनाते है और देश को उजाड़ते हैं। आज के नेताओं का काम भाषण देना है देश चलाना नहीं। एक नेता अपने भाषण से वाद को जन्म देता है तो दूसरा नेता अपने भाषण से उसका प्रतिवाद करता है। बस भारतीय राजनीति इन्हीं वाद -प्रतिवादों के संघर्ष से धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है।

भारतीय समाज की संरचना को थोड़ा समझाते हुए लेखक ने आदमी की स्थिति के आधार पर वर्गीकरण किया है। समाज अपने व्यवहार में बडा ही साफ होता है। वह आदमी के साथ व्यवहार इंसानियत के आधार पर न करके बल्कि उसकी श्रेणी के आधार पर करता है। आदमी की पहली श्रेणी होती है जो धन और सत्तावान है। दूसरी श्रेणी उन लोगों की है जो गरीब है और अपने जीवन यापन के लिए मेहनत और संघर्ष को आधार बनाता है। पहली श्रेणी के ऊपर हाथ उठाने की हिम्मत कोई नहीं करता लेकिन, "आम आदमी को कोई भी राहगीर पत्थर मार देता है या डंडा जमा देता है। आम सड़क पर टपक पड़ता है । आम आदमी को कोई भी सड़क छाप नेता पीट देता है प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से। आम आदमी का (विशेषतः बेचारे मास्टर का) तबादला करा देता है खास आदमी (सड़क छाप) नेता और देखते ही देखते आम आदमी सड़क पर आ

जाता है। आम का अचार डलता है आम आदमी का अचार हमारे नेतागण बनाने पर तुले हुए हैं। खास आदमी की कृपा पर आम आदमी जीवित है मर्जी में आता है तो उसे झोपड़ी दे दी जाती है, अन्यथा छीन ली जाती है। चूसो जितना बने।'' 3 स्वतंत्रता से पहले जो नेता आम आदमी के लिए हीरो हुए करते थे स्वतंत्रता के बाद वही नेता सबसे खलनायक बनकर उभरे । नेता स्वातंत्रयोतर व्यंग्य साहित्य में सबसे महत्वपूर्ण पात्र बनकर उभरे हैं। आम आदमी को महत्ता चुनाव के वक्त ही मिलती है जब नेताओं को इनके वोट चाहिए होते हैं तब उन्हें मकान बनाकर देने का वादा किया जाता है लेकिन चुनाव जीतते ही उनकी सिर पर से झोपडी भी नहीं रहने देते।

शरद जोशी ने दो ही नाटक लिखे हैं' 'एक था गधा उर्फ अलादाद खां' और 'अंधों का हाथी'। यह दोनों नाटक आपातकालीन परिवेश के तुरंत बाद लिखे और प्रकाशित हुए है। पहला नाटक आपातकाल की उस अंधेर नगरी का जीवंत प्रामाणिक दस्तावेज है जो भारतीय इतिहास में कभी सच हुआ था। आपातकाल भारतीय इतिहास में एक काला दिवस था। जो चंद राजनीतिज्ञों की इच्छा -पूर्ति का माध्यम बना। आपातकाल ने राजनीतिज्ञों की भूख को और भी उजागर कर दिया कि उनके लिए देश नहीं, बल्कि स्वयं का अस्तित्व आवश्यक है। शासन की इन्हीं नीतियों से असंतुष्टी शरद जोशी के नाट्य लेखन का कारण बनती है-'' देश में आपातकाल का डिक्टेटरी वातावरण मेरे मन पर हावी था नवाब को मैं सामान्य थिएट्रिकल भाषा नहीं देना चाहता था।'' 4

साहित्यकारों, चिंतकों, बुद्धिजीवियों पर तानाशाही अकंुश लगा दिया गया था। आम नागरिक शासन के खिलाफ बोलने से कतराने लगे थे। समाज का एक ऐसा वर्ग उतना ही सोचता था और बोलता था जितना उन्हें कहा जाता था। आपातकाल का तानाशाही शासन और विद्रोही वातावरण जैसे गुलामी का समय वापस ले आया। परतंत्रता के दंश का अहसास गहराता चला जा रहा था। यह नाटक आपातकाल के उस भयंकर सच की याद दिलाता है जहाँ परिवार नियोजन देश की समस्या नहीं बल्कि व्यक्तिगत उन्नति का माध्यम बनी। आपातकाल के समय संजय गांधी द्वारा जबरन नसबंदी अभियान पर लेखक व्यंग्य कसता है। मरीजों से पटा रहने वाले अस्तपाताल जनसंख्या समस्या निवारण अभियान से जादू की तरह खाली हो गए थे।

नगरों के सौन्दर्यीकरण के नाम पर झुग्गी झोपड़ी को तोड़ा जा रहा था। ''कोतवाल:- 'बच्चा ? नजर नहीं आ रहा जब से ये परिवार नियोजन लग गया मालिक तब से बच्चे बहुत कम हो गए''।'5 बड़ी ही रोचकता से नाटककार, समाज और राजनीति के खोखलेपन की बखिया को उधेड़ते हुआ चलता है। प्रशासन और प्रशासक की वास्तविकता परत दर परत प्रत्येक दृश्य में खुलती चली जाती है।

स्वातंत्र्योतर भारतीय समाज में व्याप्त आडम्बरों छल-छद्म वाले नकाबपोश नेताओं के दोगले व्यवहार और प्रशासन तंत्र में कार्यरत प्रत्येक अवसरवादी आज अपने ही स्वार्थ सिद्धि हेतु लगा हुआ है। शरद जोशी के नाटक सोई जनता को वास्तविकता का साक्षात्कार कराते चलते हैं। एक था गधा नाटक का प्रारंभ नबाव द्वारा आडंबरी आत्मप्रदर्शन, झूठी आत्मप्रशंसा और व्यर्थ के आत्मदंभ के लोभ से होता है। लोकतंत्र लोगों का, लोगों के लिए, लोगों के द्वारा, चलाया गया शासन है। लेकिन एक था गधा नाटक में नबाव

लोकतंत्र की एक नई परिभाषा गढ़ते नजर आते हैं लोकतंत्र नबाव का ,नबाव के लिए, नबाव के द्वारा चलाया गया शासन है। यह एक ऐसा लोकतंत्र है जिसमें लोग तो है, उनका तंत्र भी है, लेकिन यह तंत्र उनपर आरोपित है जिसे वे आँख, कान, दिमाग होते हुए भी अनदेखा कर रहे हैं। राजनीति क्या है ? राजनीति किसे कहते है? उसकी व्याख्या बड़ी ही सुन्दर ढंग से करते हुए नबाव कहते हैः- नबाव:-‘ हजारों लोगों की यह भीड़ एक आईना है। यह भीड़, जिसमें अपना अक्स बनाए रखना और कोशिश उसे बनाए रखने की राजनीति है, जिसके लिए अगर जरूरी हो तो एक लाश नहीं लाशों के अंबार भी खड़े करना पड़े तो गल्त नहीं अगर बनाए रखना है राजनीति यानी अक्स कायम रहना चाहिए’।6

स्वतंत्रता पहले जिस देश की रक्षा के लिए नेता अपना सर्वस्व त्याग जीवन बलिदान करने को तैयार रहा करते थे। स्वतंत्रता पश्चात् लालची नेता जनता का सर्वस्व ग्रहण कर आम जनता को मारकर अपना हित करने में सदैव तत्पर
रहते हैं, व्यवस्था में व्याप्त विसंगतियों ने व्यक्ति को चापलूस बना दिया है। जहां हर तरफ आत्मसम्मान कम और चाटुकारिता ज्यादा है । भारत अब कुर्सी प्रधान देश हो गया है, जहां जिसके पास कुर्सी है , शक्ति उसी के पास है।

स्वातंत्रयोतर भारत में राजनीति का एक ऐसा ताना- बुना गया जिसमें लोकतांत्रिक शक्तियों को शक्तिहीन बनाकर सुविधाभोगी तथा चापलूसी भरी राजनीति को शक्तिशाली बनाया गया। सत्ता प्राप्ति के पश्चात् झूठे यश को पाने के लिए जनता के समक्ष भ्रांतियों का आवरण तैयार किया गया । जनता उतना ही देख पाती है जितना उसे दिखाया जाता है। राजनीति का महामंत्र है कि लोगों को कुछ चुनावी वायदे और नारे दे दो । राजनीतिक पटल पर इंदिरा गांधी ‘गरीबी हटाओ’ का नारा लगाती हुई दिखाई देती है लेकिन आज भी गरीब वहीं पर है लेकिन राजनेता जरूर फर्श से अर्श तक पहुँच गए हैं। ‘गरीबी हटाओ’ इस नारे की खूबी यह रही कि नेताओं ने सबसे पहले अपनी अपनी गरीबी हटाई और फिर गरीबों को अपने रास्ते से हटाते हुए कहते नजर आते है अरे भाई गरीबी हटा रहे है।

नवाब:-‘ बड़ा असर पड़ता है लोगों पर हमारे वालिद कहा करते थे कि हुकूमत का पहला उसूल यह है कि आम आदमी को बेवकूफ बनाए रखो’।7

नेताओं द्वारा संसद में जाकर बेकार की बहसें करना जिनका देश से कोई संबंध नहीं होता और हंगामें द्वारा संसद की कार्यवाही को रोका जाता है उनपर व्यंग्य करते हुए नाटककार कहता है कि बेकार की बहसों में जनता को उलझाये रखो जनता तक देश का सच पहुँचने मत दो । जनता के समक्ष इस प्रकार व्यवहार करना कि उनका हित सिर्फ उन्हीं लोगों द्वारा सध सकता हैं। बाकी नेता तो व्यर्थ के वादे करते हैं। यदि इस अक्स को बिगाड़ने के लिए कोई विद्रोह करता है तो उसे सिर उठाने से पहले ही कुचल दो। भ्रष्टाचार और चापलूसी ने व्यक्ति के विवेक को कुंद कर दिया है। साहित्यकार बुद्धिजीवी का दायित्व सही- गलत की पहचान करा समाज का मार्गदर्शन कराना होता है ,लेकिन जब बुद्धिजीवी ही अपने मार्ग से भटक जाए तब क्या किया जा सकता है। सफलता का मूलमंत्र परिश्रम नहीं बल्कि चापलूसी है जितना आप अफसरों की चापलूसी करेंगे उतना ही आप सफलता की सीढ़ियाँ
चढ़ते चले जाएँगे।

नागरिक 2:-‘क्यों नहीं ? अरे भाई अगर आगे बढ़ना है ,जिदंगी में प्रगति करनी है, तो अफसरों से चिपककर रहो कामयाबी कहीं नहीं जाती बधाई प्यारे !’ 8

पद देते वक्त व्यक्ति की योग्यता का ध्यान नहीं रखा जाता है। कोतवाल जो नगर की न्याय-व्यवस्था का प्रतीक है, शिक्षा के महत्व से अनभिज्ञ है। फिर भी चाटुकारिता के बल पर वह कोतवाल जैसा महत्व का पद पा जाता है। नेताओं ने मीडिया, साहित्य, शिक्षा, संस्थान आदि पर अपना कब्जा कर लिया। ये संस्थान सिर्फ वही करेंगे जो ये नेता कहेंगे उसके अतिरिक्त ये कुछ नहीं करेंगे।ऐसा है एक सच हमारी वर्तमान राजनीति का जहाँ अशिक्षित नेता बड़े- बड़े पदों पर बैठे हैं। जीवन में सफलता पाने के लिए आपके पास सिफारिश होनी चाहिए। भाई भतीजावाद इतना फैल चुका कि नौकरियाँ उसी को मिलती है जिसकी सिफारिशें होती है नौकरी का आधार योग्यता नहीं बल्कि सिफारिशें बन रही हैं।

कोतवाल:-‘ मगर तुम क्यों सिफारिश करते हो तुम्हारा कोई लगता है बिना रिश्ते के कोई सिफारिश नहीं करता हमारे राज में’।9

भ्रष्ट नेता अपनी ही भाई बंधुओं के हित के बारे में सोचते हैं कि उन्हें शासक वर्ग कैसे फायदा पहुँचा सकता है। जिसके हाथ में सता ,शक्ति है वही अपना शासन चला सकता है। आम आदमी के हित की अनदेखी की जाती है।

अपने झूठे यश के लिए नबाव अलादाद को देश के लिए कुर्बान होने के लिए कहता है। इस शासन व्यवस्था में जानवर और इंसान में कोई अंतर नहीं है। शासक वर्ग पर आँख मूंदकर विश्वास करने का क्या हश्र होता है इसकी बेबाक बयानी जोशी के नाटक करते हैं।

देश- सेवा तलवार की धार नहीं बल्कि फूलों की सेज है। राजनीतिज्ञ होना आजकल सबसे पसंदीदा व्यवसाय बन गया है जिसमें कम समय में जिदंगीभर के लिए अर्जन किया जा सकता है। भ्रष्ट सता, अविवेकी शासक और व्यवस्था में प्रजा हमेशा से बेहाल रही है। धन और बल की लाठी से न्याय की भैंस को हमेशा से हाँकती रही हैं। व्यवस्था के संचालक अपनी शक्ति के द्वारा जनसामान्य को सदा से ठगते रहे हैं।

शासक को शोषण की शक्ति स्वयं प्रजा के रूप में विद्यमान कुछ चापलूस ही देते हैं। यदि प्रजा अपने अधिकारों के प्रति सजग हो जाए तो शासक वर्ग की हिम्मत नहीं पडेगी कि वो प्रजा का शोषण करें। वर्तमान राजनीति में कुर्सी को बचाए रखना तथा जनता के बीच अपनी छवि को बनाए रखना ही नेताओं का प्रमुख काम है । नबाव प्रजातंत्र नामक शासन व्यवस्था का तानाशाह का प्रतीक है। नैतिकता से हीन होकर शासक वर्ग का व्यक्तित्व विघटित हो गया है। वे प्रत्येक अवसर पर भिन्न भिन्न मुखौटे को धारण करते हुए नजर आता है, लेकिन उनका वास्तविक रूप कुछ और ही होता है। इस नाटक में शरद जोशी ने अलादाद की मृत्यु दिखाकर मृत होती समाज की व्यवस्था और नैतिकता का व्यंग्यपूर्ण चित्र खींचा है। एक दूसरे से आगे बढ़ने की दौड़ में आज व्यक्ति इतना स्वयं से इतना पीछे छूट चुका है कि उसकी मानवीय संवेदनाएँ कब उसका साथ छोड़कर चली गयी कि उसे पता भी न चल सका। सत्ता वर्ग के खिलाफ जब भी कोई बोलने की चेष्टा करता है तो उसे विद्रोह करने और करवाने के लिए जिंदा नहीं छोड़ा जाता है।

नबावः-‘ क्या कहा हम बेहतर नवाब नहीं है कोतवाल इसका सर कलम किया जाए, फौरन

शब्द-ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 जुलाई 2014

कलम करने की जरूरत नहीं हमें ऐसे सोचने समझने वालों की जरूरत नहीं है जिनके दिमाग में हमारे खिलाफ बातें आएं'।10

निष्कर्ष

हिंदी व्यंग्य साहित्य पढ़ने पर कभी पुराना नहीं लगता है। हिंदी व्यंग्य साहित्य तो अपने समय की हर छोटी से छोटी से घटना पर इतना गहरा विचार व्यक्त करता है कि वह अपने युग का प्रामाणिक इतिहास बन जाता है। संवेदना का धरातल जैसे लेखक का न होकर प्रत्येक व्यक्ति का लगता है। जैसे युग बदला ही न हो शासक वही शासन वही। कितनी विडंबना है कि आजाद भारत की तस्वीर तब वही थी आज भी वही है। देश और हमारे सामने स्वार्थ में अंधें नेताओं की ये फौज पहले भी खड़ी थी ,अब भी खड़ी है। समस्या का सामना हमें स्वंय करना होगा। हिंदी व्यंग्यकारों ने अपने समय की विसंगतियों पर खुलकर प्रहार किया है। उनका साहित्य आजादी के बाद का प्रामाणिक दस्तावेज है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 नरेन्द्र कोहली ,मेरी प्रतिनिधि व्यंग्य रचनाएँ में भगवान की औकात से उद्धत , पृष्ठ संख्या 44, भावना प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण 2006

2 नरेन्द्र कोहली ,मेरी प्रतिनिधि व्यंग्य रचनाएँ में संकलित संतों की बिल्लियाँ और चूजे से उद्धत , पृष्ठ संख्या 89, भावना प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण 2006

3 हरि जोशी , व्यंग्य के रंग में संकलित आम और आम आदमी से उद्धत 42 सन्मार्ग प्रकाशन प्रथम संस्करण 1993

4 शरद जोशी , (दो व्यंग्य नाटक) में संकलित 'अपनी बात' से उद्धत पृष्ठ संख्या 6, राजकमल प्रकाशन संस्करण 2012

5 शरद जोशी, (दो व्यंग्य नाटक) , पृष्ठ संख्या 14, राजकमल प्रकाशन संस्करण , 2012,

6 शरद जोशी, (दो व्यंग्य नाटक) , पृष्ठ संख्या 79, राजकमल प्रकाशन संस्करण , 2012,

7 शरद जोशी , (दो व्यंग्य नाटक) , पृष्ठ संख्या 53,राजकमल प्रकाशन संस्करण , 2012,

8 शरद जोशी, (दो व्यंग्य नाटक) , पृष्ठ संख्या 23, राजकमल प्रकाशन संस्करण , 2012,

9 शरद जोशी, (दो व्यंग्य नाटक) , पृष्ठ संख्या 55, राजकमल प्रकाशन संस्करण , 2012,

10 शरद जोशी , (दो व्यंग्य नाटक) , पृष्ठ संख्या 55, राजकमल प्रकाशन संस्करण , 2012,